संस्मरण -ऐसी थी मेरी बहू मोनू

यद्यपि जीवन के सभी लम्हे, सभी पल संग्रहणीय हैं। दुख का सागर भरा हुआ है, मेरे जीवन में! जिसने भी मेरी सेवा किया, जिसने भी मुझे सुख दिया उसी को भगवान उठाकर ले गया। मेरी बहू मोनू जो बहुत चंचल, ताकतवर, अच्छे स्वभाव वाली, जिसने भी मोनू से बात किया मेरी बहू मोनू का प्रशंसक हो गया।

आज वह पड़ी है। मैंने उसके लिए मुलायम, गुलगुले गद्दी पर तकिया लगा कर सुलाया था। लम्बी पूरी तंदुरुस्त शरीर वाली मेरी मोनू के पैर चारपाई के बाहर निकल आए थे।

शाम के वही कोई आठ बजे के करीब मोनू के सीने में दर्द, जलन होने लगा था। मन का धन हमें लगा कि, कुछ खा लिया क्या! मखखी पकड़ कर पिलाने से तुरंत उल्टी हो गई थी। गाड़ी चार पहिया किराए की किया था, तुरंत तीस किलोमीटर के लगभग दूर जिला चिकित्सालय ले गए थे, जहां बोतल चढ़ाई जाने लगी थी।

ड्यूटी पर तैनात डाक्टर ने कहा, "यहां कुछ भी हो, चाहे खाने - पीने का हो या हार्ट का हो हमारे पास उपकरण उपलब्ध नहीं हैं। आप बांदा मेडिकल कॉलेज ले जा सकते हैं, हम कागज बना देंगे!"

मैंने कहा, मेरे साथ वालों ने कहा, "बांदा में सभी सुविधाएं मिलेंगी क्या?"

उन्होंने असमर्थता जताई थी। हमारे कहने पर डाक्टर ने स्वरूपरानी मेडिकल कॉलेज प्रयागराज को स्थानांतरित कर दिया था।

हम लोग प्रयागराज जा ही नहीं पाए थे कि, मेरी बहू मोनू ने दम तोड़ दिया था।

वह निर्जीव शरीर पड़ी थी। मुझे याद आ रही थी उसकी बिदाई जब मेरी प्यारी बड़ी बहू मोनू अपने मायके से बिदा होकर मेरे घर आई थी २००७ में, तब वह मासूम थी। मेरे घर में खुशियां ही खुशियां लेकर आई थी। हम तीर्थों में स्नान, भ्रमण अपनी बहू मोनू, बेटा दुर्गेश के बल पर तीर्थ यात्रा से लेकर मनुष्य को जो भी अच्छे कर्म करने चाहिए वह सभी अच्छे कर्म हम पति-पत्नी करते रहते थे।

तब भी ऊपरवाले से देखा नहीं गया, मोनू के पति को हार्ट अटैक हुआ, हमें भारी दुख के सागर में गोते लगाने पड़े थे। मोनू की सास अर्थात मेरी पत्नी शोभा भी एक दिन मुझे छोड़कर चली गई थी, 22 मार्च 2023 को भला कैसे भुलाया जा सकता है।

मेरी बहू अपना गम भुलाकर मुझे भोजन आदि से संभालने में लग गई थी। सुबह चार बजे उठना, पूरे घर की बाहर भीतर सफाई करना, मुझे पानी देना, मेरे नित्यकर्म संपन्न हो जाते ही मैं स्नान करता था। मेरे नहाने तक मोनू अपने चूल्हा - चौका आदि के काम निपटा लिया करती थी।

फिर वह खुद भी नहाती थी।

मैं पूजा पाठ में लग जाता था। मोनू नहाकर देवी मां के मंदिर में सफाई करती। माता रानी की सेवा किया करती थी।

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in

मेरी पूजा समाप्त नहीं हो पाती थी कि, मेरी बहू मोनू मुझे नींबू वाली चाय रखकर चली जाती थी। मेरी चाय समाप्त हो जाती थी। बस थोड़ी ही देर में मेरे पसंद का नाश्ता, नाश्ता नाम था वह भरपेट भोजन हुआ करता था, मेरे पास लाकर मोनू पानी आदि सब शालीनता से उचित प्रबंध करके चली जाती थी।

बीसों जोड़ी कपड़ों में बहुत से कपड़े मोनू के पिता मुझे दिया करते थे, उनका रखरखाव मोनू अपने हाथ ले रखा था।

मैं उसे बताया नहीं करता था, फिर भी मोनू जान जाती थी। जब मुझे कहीं जाना होता था तब मोनू कपड़े लेकर आती थी कहती थी कि, "लो पापा, इनको पहन लो!"

मैं दिन भर में आता या कई दिनों में, मेरे झोले में दो जोड़ी कपड़े डाल दिया करती थी। मैं आता था कपड़े उतार कर रख दिया करता था। मेरी बहू मोनू कहां है मैं नहीं देख पाता

था, वह मुझे देख लिया करती थी। मैं कपड़े बदल कर बाहर होता, मुड़कर देखता वहां कपड़े नहीं होते थे। मैं शाम को उसे प्रेस करते देखा करता था तब सब समझ जाता था।

फोन पर कोई पूछता उससे मेरे लिए तो, वह बहुत ही खुश होती हुई कहती, "हां, मेरे पापा आ गए हैं!"

खाने में मेरी पसंद वह जानती थी। दोनों जून खाना खाते समय कटोरी में घी मुझे खाने को देती थी। कहीं भी घर से बाहर जाती थी तो, मेरे लिए कभी अच्छी वाली नमकीन, कभी समोसा ले आती थी।

मेरे लिए कभी चाट, कभी फुल्की बनाया करती थी। मोनू मुझे मां की तरह दिनभर कुछ न कुछ चुनाया - खिलाया करती थी।

नवरात्रि में नव दिन व्रत रखकर देवी मंदिर में जो हमारे घर के सामने ही है, भारी सजावट के साथ उत्सव मनाया करती थी। देवी मां को कपड़े पहनाना, प्रसाद चढ़ाना, देवी को जगाने से लेकर सुलाने तक का काम करती थी। साउंड के साथ मुहल्ले भर की औरतें, बेटियां सभी मेरी बहू मोनू के साथ गान - तान के साथ नाचती, थिरकती थीं।

बिना मुझसे पूछे कहीं नहीं जाती थी। मैं अपनी बहू मोनू की जितनी प्रशंसा करूं बहुत ही कम होगी। इतने बड़े घर में मेरी बड़ी बहू मोनू अकेली रहती थी, कोई भय नहीं! वह अकेली मेरे लिए ऐसा लगता था कि, वह एक अकेली सौ के बराबर रहती थी, ऐसा लगता था कि, पूरा घर भरा है। लक्ष्मी का भंडार लगा रहता था।

वह मेरी बहू मोनू पचास किलोग्राम का वजन गेंद की तरह उछाल देती थी। अपने मायके से पचास किलोग्राम तक का वजनी सामान लेकर आती थी, तीन जगह गाड़ी बदलती थी, किसी से मदद नहीं मांगती थी, खुद उठाकर रखती थी।

मेरी बहू मेरा स्वाभिमान थी, मेरी बहू मोनू मेरा सिर नहीं झुकने दिया था। वह सदैव मेरी नाक, मेरी लाज को ऊंचा रखती, सुरक्षित रखती थी। किसी ने उसे अनाथ, विधवा समझकर कुछ देना चाहा था तो वह उसे अच्छा खासा जवाब दिया था।

मेरी बहू मोनू किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया, वह किसी के बुलावे पर गई थी तो उसके यहां मेहनत से उसके काम को किया था। वह सभी का दिल जीत लिया करती थी।

वह लोगों से यही कहती थी कि, "मेरे सबकुछ है, मेरे पापा, मेरे ससुर सबकुछ पूरा किए रहते हैं!"

मेरी बहू मोनू देवी सौ आदमी का खाना अकेली बना लिया करती थी। वह बहुत अच्छा, स्वादिष्ट भोजन बनाने में निपुण थी।

मेरी बहू मोनू देवी निष्कपट, बिना किसी ईर्ष्या - द्वेष के बहुत ही निश्छल बेटी थी मेरी!

आज वह शांत पड़ी थी, देखकर मेरा कलेजा फटा जा रहा था। मेरे आंसू बंद नहीं हो रहे थे। हां मेरी मौत नहीं आ रही थी क्योंकि, मेरी बहू मोनू मुझे बुलाते हुए दम तोड़ा था।

जबतक मेरी सांसें चलेंगी, यह चांद - सितारे चमकेंगे तब तक मेरी बड़ी बहू मोनू का नाम चलेगा। मोनू कभी भी मेरे लिए नहीं मरेगी!

वह सितारों के बीच एक अलग सितारा बनकर एक अलग पहचान, एक अलग रौशनी देती रहेगी।

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in

- डॉ सतीश "बब्बा"

पता - डॉ. सतीश चन्द्र मिश्र, ग्राम + पोस्ट = कोबरा, जिला - चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश, पिनकोड - 210208.

मोबाइल - 9451048508, 9369255051.

ई- मेल - babbasateesh@gmail.com